ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

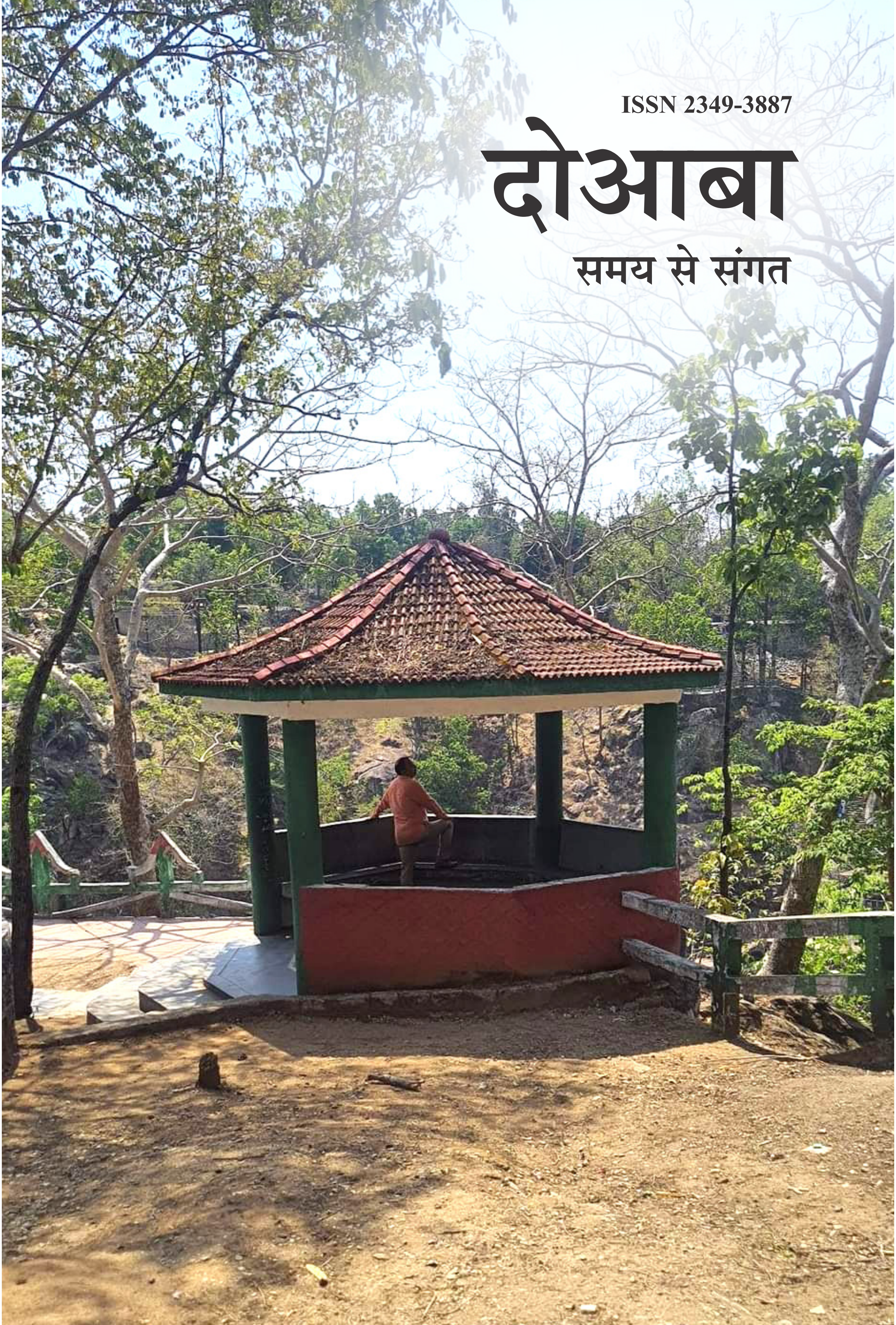

तुम अपने हथियार लेकर आना
हम अपने ताबूत लेकर आएंगे
तुम अपनी वीरता के जश्न मनाना
हम अपने मुर्दों का शोक मनाएंगे
तुम अपने ख़ून-रंगे हाथों को
पवित्र जल से धो लेना
हम अपने मरने वालों को दफ़ना कर
आंसुओं से अपनी हथेली धो लेंगे

तुम अपनी वृद्ध लिप्साएं लेकर आना
हम अपनी लहूलुहान तरुणाई
लेकर आएंगे
तुम अपनी अटारी पर
रासलीलाएं रचाना
हम अपने मृतकों की आत्मा
के लिए प्रार्थनाएं करेंगे

पर याद रखना
जल्द ही एक दिन हम
अबाबीलों कबूतरों और गौरैयों के
झुंड बनकर
मुट्ठियों में छोटी-छोटी
कंकरियां लिए
सावन की तरह
तुम्हारे सिंहासन पर बरसेंगे

तुम बचा लेना अपनी सेनाएं
अपने अश्व-रथ
इन छोटी-छोटी कंकरियों से

'कातर आंखों ने देखा' से

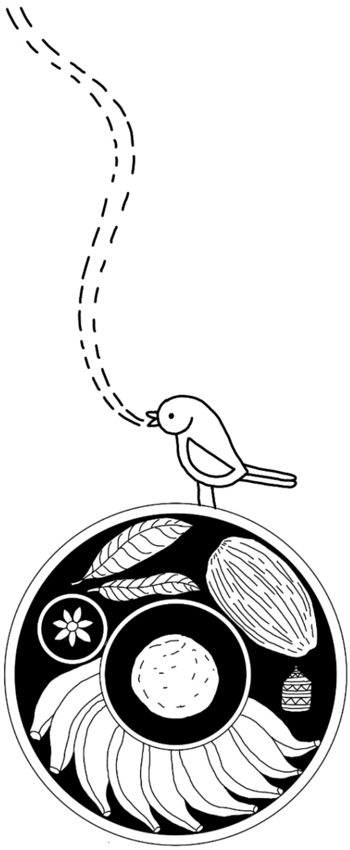

जुलाई-सितम्बर 2023

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

जुलाई–सितम्बर 2023

वर्ष 17 : अंक 46

आवरण सौजन्य **:** नवीन कुमार मिश्र

रेखांकन **:** अनुप्रिया

मानद सहयोग

शहंशाह आलम

लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क

247 एम आई जी

लोहियानगर, पटना – 800 020

e-mail : doabapatna@gmail.com

मो.–08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट

शाहगंज, पटना–800 006

मो.–09334116542

मूल्य : ₹ 150/– (डाक खर्च अलग)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

संपादक **: जाबिर हुसेन**

मो.–09431602575

जुलाई-सितम्बर 2023

दोआबा

समय से संगत

अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

आत्मगत

मधुरेश : वह भी एक दौर था / 08

कथा समय

विद्याभूषण : सुबह के उजास में ठंडी हवा की छुअन / 16

शमा खान : अराधना / 24

अर्चना मिश्रा : नीली आंखों वाला लड़का / 28

प्रीति सिन्हा : सिमटती-बिखरती पंखुड़ियां / 38

कविता समय

शहंशाह आलम / 43
अशोक शाह / 44
पल्लवी मुखर्जी / 47
नरेश अग्रवाल / 51
शैलेन्द्र शांत / 53
यतीश कुमार / 55
विनय सौरभ / 57
पंखुरी सिन्हा / 63
सिद्धेश्वर सिंह / 67
श्रद्धा सुनील / 70
चन्द्र मोहन / 73
विशाखा मुलमुले / 75
सारिका भूषण / 77
स्मिता वाजपेयी / 79
यामिनी नयन गुप्ता / 82
पूनम सोनछात्रा / 84

संवाद

सूखे पत्तों के रंग *(जाबिर हुसेन)*
प्रेम कुमार : पढ़ने के बाद कुछ एहसास / 88
किरण अग्रवाल : परछाइयों की गूंज / 97
शहंशाह आलम : साए की तरह साथ चलने वाली स्मृतियां / 101
आधी सदी का सफरनामा *(क़मर मेवाड़ी)*
माधव नागदा : यदि तुम्हें गाने की अनुमति नहीं मिली तो
तुम अवश्य मर जाओगे / 106
कैसा ये वनवास *(कुमारी लता प्रासर)*
लक्ष्मीकांत मुकुल : मनुष्यता के बोध को उकेरती कविताएं / 110
दोआबा-45 (अप्रैल-जून, 2023)
शहंशाह आलम : साहित्य की सामाजिक चेतना को
आकाश का विस्तार देती है दोआबा / 114
ध्रुव कुमार : पाठक जिसका करते हैं बेसब्री से इंतज़ार / 116
सरला माहेश्वरी : कलात्मक रेखांकन से सुसजिज्त *दोआबा* / 119
पूनम सिंह : सुंदर आवरण / 120
राजेश्वर वशिष्ठ : अद्‌भुत है संपादक का कवि-रूप / 120

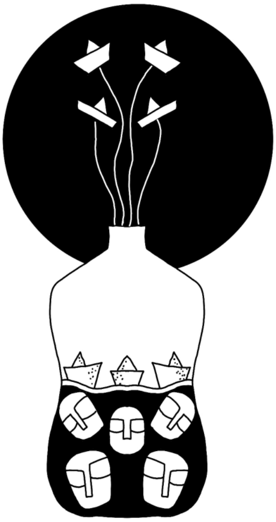

जाबिर हुसेन

अपनी बहन ज़ीशान फ़ातमी की मौत पर

1961 में, जब मेरी मां का निधन हुआ, मेरी तीन बहनें थीं। उनमें केवल एक का विवाह हुआ था। आज की तारीख़ में उनमें से कोई जीवित नहीं।

तब हम चार भाई थे। मैंने हायर सेकेन्ड्री की परीक्षा भर दी थी। अब मैं अपने भाइयों में तन्हा रह गया हूं। इस तरह, मेरी तीन बहनें और तीन भाई, एक-एक करके, मुझे तन्हा करते गए। अब मैं भाई-बहनों में अकेला रह गया हूं।

आज सोचने बैठता हूं तो सब भाई-बहनों के चेहरे, बारी-बारी, मुझे याद आते हैं। बड़ी बहन, जो मुझे अपनी संतान की तरह मानती थीं, उसने मुझे छोटे-मोटे कई नाम दे रखे थे।

बाद की दो बहनें, कालेज की मेरी पढ़ाई के दिनों में, मेरा ख्याल रखती थीं। उदास लम्हों में, वे ही थीं जो मेरे बेतरतीब कपड़ों के साथ मेरी किताबों की देखभाल करती थीं। फिर उनकी शादी हो गई, और वो अपने घर चली गईं। इस प्रकार, कोई घर, जिसे मैं अपना ठिकाना कह पाता, पूरी तरह उजड़ गया। मेरे पिता अपनी उजड़ी हुई यादों के साथ अपनी छोटी बेटी ज़ीशान के साथ पटना आ गए।

अभी, पिछले दिनों, मैं अपनी इसी छोटी बहन के जनाज़े की नमाज़ में शरीक हुआ, और अपनी धुंधलाई आंखों से उसकी क़ब्र में अपने कांपते हाथों से मिट्टी डाल आया। क़ब्र